ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

# Footnotes

**Pre- Ph.D Course Work**

**Paper - Research Methodology**

**Dr. Manoj Kumar**
**Assistant Professor (Guest)**
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

# Footnotes

पाद टिप्पणीयां लेखक द्वारा दिए गए कथनों का समर्थन करते हैं और लेखक द्वारा प्रयोग किए गए स्त्रोतों की जानकारी प्रदान करते हैं। पाद टिप्पणीयां एक शोध कार्य की आवश्यकता होती है। यह लेखक के कार्य को प्रमाणिकता प्रदान करते हैं और साथ ही उस विषय पर अन्य विद्वानों के योगदान को स्वीकृति प्रदान करते हैं। वह मूल स्त्रोतों से सलाह लेने में सहयोग प्रदान करते हैं ताकि विद्वानों द्वारा निकाले गए अर्थ अथवा निष्कर्ष पर एक विवाद सुलझे।

पाद टिप्पणीयां पृष्ठ के नीचे दी जाती हैं ताकि कृति में चल रही चर्चा बाधित न हो। मुख्यतः ये दो उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं -

1. पहला मूल पाठ को दुरूह सामग्री से मुक्त करना तथा
2. दूसरा मूल पाठ के कथनों की जानकारी के लिए स्त्रोतों को उद्धृत करना।

संदर्भ पाद-टिप्पणियों के लेखन के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत कोई विधि नहीं है। इसीलिए कुछ प्रकाशक संस्थाएं प्रकाशन हेतु पुस्तकों, लेखो, सर्वेक्षणों इत्यादि की प्रस्तुति के लिए अपने स्वयं के मापदंड को निर्धारित करते हैं। तत्पश्चात कुछ पाद टिप्पणियां लंबे होने के कारण समस्या उत्पन्न करती थी, इसीलिए इस प्रकार की समस्या से निपटने के

लिए लेखक द्वारा इन्हें शीर्षक के साथ अध्याय के अंत में दिए जाते है । पाद टिप्पणी और संदर्भ आरोही क्रमानुसार व्यवस्थित होते हैं । कई बार तो वे विस्तृत होने के कारण पुस्तक के अंत में अध्यायवार दिए जाते हैं ।

**पाद टिप्पणियों का तरीका :-**

पाद टिप्पणी के प्रारूप और शब्द सदैव यह स्पष्ट करते हैं कि टिप्पणी किस कथन को प्रस्तुत करना चाहती है और कौन सी पुस्तकें उद्धृत करना चाहती है । पाद टिप्पणीयां सीधे तरीके से लेखक का नाम , पुस्तक का नाम, प्रकाशन स्थान और प्रकाशन वर्ष तथा संस्करण उल्लिखित करते हुए दी जा सकती है । एक ही संदर्भ की स्थिति में इसे निम्नलिखित तरीके से उल्लिखित किया जाना चाहिए- उदाहरण के लिए टी. आर. शर्मा , दी कांसेप्ट हिस्ट्री , दिल्ली ,1987 (T.R. Sharma, The Concept of History, Delhi, 1987) ।

यदि बाद में आने वाला संदर्भ भी एक ही लिखा हो तो उसे 'Ibid.' द्वारा इंगित कर सकते हैं ।

यदि पृष्ठ संख्या बदल गई हो तो उसे आई.बी.आई.डी.( Ibid.) के बाद दूसरी पृष्ठ संख्या के उल्लेख द्वारा इंगित कर सकते हैं । यदि निकट के पृष्ठ में एक लेखक की एक ही पुस्तक का बार-बार उपयोग हो रहा हो तो

पहले लेखक का नाम और फिर संकेत चिन्ह 'op. cit.'(उद्धृत कृति में ) एवं 'loc.cit.'(उद्धृत स्थान पर ) उल्लिखित कर सकते हैं।

एक संपादित कृति में एक लेख की स्थिति में, लेख के शीर्षक को उद्धरण-चिन्हों (Inverted Commas) के अंदर लिखा जाना चाहिए। जैसे रोमिला थापर **"अशोकन इंडिया एंड दी गुप्त एज"**। यदि दो संपादक हो तो दोनों का ही नाम लिखे जाने चाहिए फिर बाद में संपादक के स्थान पर कोष्ठक में संपादक "(सं)" इंगित होता है। प्रलेखों के एक संग्रह के संदर्भ में पहले संग्रह का नाम फिर खंड का नाम अर्थात खंड संख्या और फिर पृष्ठ संख्या उद्धृत करते हैं।

एक समाचार पत्र की स्थिति में समाचार पत्र का नाम तिथि वर्ष और पृष्ठ संख्या इंगित की जानी चाहिए।

**सावधानी**

पाद टिप्पणियों के उपयोग में व्यक्ति को या शोधार्थी को सावधानी रखनी चाहिए। शोधार्थी को विश्वास होना चाहिए कि टिप्पणियों में प्रयुक्त संदर्भ पूर्णता सही है। लेखक को शुद्धता के लिए पुस्तक के एक ही संस्करण का प्रयोग करना चाहिए एवं अन्य लेखकों की कृति से नकल नहीं करनी चाहिए। भिन्न-भिन्न संस्करण का उपयोग किए जाने से ट्रस्ट संस्थाएं बदल सकती हैं अथवा लेखक का विचार बदल सकता है।

इसीलिए पाद टिप्पणियों को लिखते समय लेखक को सावधानी रखनी चाहिए।